भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर – 208 002
(उत्तर प्रदेश)
An ISO 9001:2015 Certified

(O) : (0512) 2533560, 2554746
Fax : (0512) 2533560, 2554746
Website : http://atarik.res.in
E-mail : zpdicarkanpur@gmail.com

दि. 10–09–2020

भाकृअनुप–अटारी की समीक्षा कार्यशाला

दि. 09–09–2020 को माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भारत सरकार कैलाश चौधरी जी द्वारा सभी 11 जोन के कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थानों (अटारी) की सीमक्षा बैठक आनलाइन आयोजित की गई। जिसमें माननीय कृषि राज्य मंत्री ने समस्त जोन के अटारी निदेशकों से पिछले 5–5 वर्ष 2018–2014 एवं 2014–2019 की प्रगति एवं आगामी 5 वर्षों की कार्ययोजना पर चर्चा की। बैठक में डा0 त्रिलोचन महापात्रा, सचिव डेयर एवं महानिदेशक भाकृअनुप नई दिल्ली, डा0 ए.के. सिंह (उप महानिदेशक–कृषि प्रसार) भाकृअनुप नई दिल्ली, अटारी जोन–3 कानपुर के निदेशक डा0 अतर सिंह के साथ समस्त अटारी निदेशक व वैज्ञानिकगण सम्मिलित रहे।

बैठक में माननीय मंत्री जी ने कहा कि विविधिकरण से लाभ मिलेगा। कोरोना महामारी को देखते हुए ब्लाक लेवल पर वर्चुअल मीटिंग पर जोर दें। प्रत्येक 10–15 में किसानों से संवाद करें तथा आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम एवं एफ.पी.ओ. पर फोकस दें। जिन कृषकों के पास एंड्राइड फोन है उनको फेसबुक पर मीटिंग करने हेतु आमंत्रित करें। अटारी के सबसे अच्छे प्रस्तुतीकरण को फेसबुक पर शेयर किया जाये जिससे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल सके। गाँवों में तकनीकी, आई.एफ.एस. माडल, कस्टम हाइयर सेन्टर, कामन सर्विस सेन्टर, फसल विविधिकरण आदि की जानकारी दी जाये। कोरोना महामारी को देखते हुए विडीयो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी किसानों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र इसे ब्लाक–वार करें। सीमीत संख्या में वैज्ञानिक हैं, अतः बड़ी संख्या में कृषकों से विडियो/आडियो कान्फ्रेंसिंग क माध्यम से जुड़ जायें। स्मार्टफोन रखने वाले सोशल साइट्स से अटारी को किसानों से फेसबुक के माध्यम से योजनाबद्ध तरीके से संबोधित करना होगा। स्मार्ट गाँव दृष्टिकोण पर भी ध्यान देना होगा, नई तकनीक एवं नई मशनीरी स्थापित करनी होगी। प्रत्येक वैज्ञानिक वर्तमान कोरोना परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए ही कृषि विज्ञान केन्द्रों का भ्रमण करें।

माननीय मंत्री जी ने कहा कि किसान उत्पादक समूहों की जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्रों पर प्रदर्शित हो जिससे किसान पढ़कर भी समझ सकें। प्रसंस्करण इकाई लगाने क की भी

सम्पूर्ण जानकारी भी प्रदर्शित हो, साथ ही हर केवीके पर आई.एफ.एस. माडल का प्रस्तुतीकरण चार्ट के माध्यम से हो। सभी निदेशकों के प्रस्तुतीकरण की मंत्री जी ने काफी सराहना की तथा सभी भाकृअनुप के अधिकारियों को अच्छे काम के लिये बधाई दी।

सहायक महानिदेशक (कृषि प्रसार) डा0 वी.पी. चहल जी ने सातवें वेतन आयोग को कृषि विज्ञान केन्द्र के लिये शीघ्र जारी करने के लिये आग्रह किया साथ ही अतिरिक्त पदों के प्रमोशन व पुराने इन्फ्रास्ट्रक्चर को ठीक नये सिरे से करने का भी आग्रह किया जो की चरणबद्ध 5–100 कृषि विज्ञान केन्द्र पर किया जा सकता है। डा0 रनधीर सिंह, सहायक महानिदेशक ने नये अटारी में पूरा स्टाफ देने का आग्रह किया तथा मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण इकाई व उद्यमिता विकास के साथ ही बाजार के जुड़ाव की बात की।

इस अवसर पर अटारी कानपुर निदेशक डा0 अतर सिंह ने भी अपने जोन के कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रगति प्रस्तुत की जिसमें कार्यरत 86 कृषि विज्ञान केन्द्र का जिक्र किया व किन–किन संस्थाओं के साथ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सहभागिता से नई परियोजना के संचालन के लिए पैसा मिलता है जैसे कि मौसम विज्ञान विभाग नई दिल्ली, क्रीडा हैदराबाद, जलवायु परिवर्तन योजना, संसाधन संरक्षण के लिए, अन्तराष्ट्रीय फसल अर्द्ध–शुष्क उष्णकटिबंधीय अनुसंधान संस्थान (ICRISAT), मानव संसाधन के विकास हेतु कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार, समूहबद्ध अग्रिमपंक्ति प्रदर्शन जैसे दलहन, तिलहन के लिये कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार से सहयोग, साथ ही अन्तराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली के साथ ही भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थान एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के साथ तकनीकी ज्ञान एवं उनका हस्तान्तरण इत्यादि के साथ ही तिलहन व दलहन में प्रदर्शन में 35–40 प्रतिशत की वृद्धि से किसानों की आय के साथ–साथ आत्मनिर्भर भी बना जा सकता है। साथ ही भाकृअनुप की योजनाओं में किये गये कार्यों की बात बताई, किसान उत्पादक समूहों के माध्यम से किसान लाभ कमा रहे हैं। बकरी व मुर्गी पालन में कई गुना वृद्धि हुई है। साथ ही, फसल अवशेष प्रबन्धन पर भी किसानों को मशीनों के माध्यम से धान–गेहूँ के चक्र में पराली न जलाने की पहल पर भी अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। अटारी कानपुर निदेशक ने आगामी कार्ययोजना के बारे में प्रस्तुतीकरण किया। प्रधान वैज्ञानिक डा. शान्तनु कुमार दुबे एवं मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री एस.एन. येमुल ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।